कुवर उदयभान चरित

सामाजिक उपन्यास

नव्वाव वज़ीर नव्वाव सत्र्यादत अलीखां के सम सामायिक सुकवि इन्शाअल्लाखां विरचित ।

KUAR UDAI BHAN

OR

A LIVELY SKETCH OF SOCIAL LIFE IN OUDH A HUNDRED YEARS AGO.

A RARE TREASURE OF COLLOQUIAL HINDI

BY

Insha Allah Khan

(A CONTEMPORARY OF NAWAB VAZIR NAWAB SAADAT ALI KHAN)

Lucknow.
Anglo-Oriental Press.
1905.

कुँवर उदयभान चरित

सामाजिक उपन्यास

नव्वाब वज़ीर नव्वाब सआदत अलीखां के सम सामयिक सुकवि इन्शाअल्लाखां विरचित ।

KUAR UDAI BHAN

OR

A LIVELY SKETCH OF SOCIAL LIFE IN OUDH A HUNDRED YEARS AGO.

A RARE TREASURE OF COLLOQUIAL HINDI

BY

Insha Allah Khan

(A CONTEMPORARY OF NAWAB VAZIR NAWAB SAADAT ALI KHAN)

Lucknow.

Anglo-Oriental Press.

1905.

PREFACE.
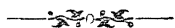
In the centuries gone by the educated and influential Mahomedan gentlemen took interest in the cultivation of the Hindi literature is amply established from the writings of Nawab Khankhana, Malik Jaisi and other eminent Mahomedan authors. European scholarship on the basis of linguistic researches has come to hold that the Hindi was the general language of the Upper Provinces and the authors and religious reformers whether Hindus or Mahomedans who wrote for or spoke to the people of the country used the Hindi—the language understood by the majority of the population—to express their sentiments. The so called Urdu was not known in those days. No work of merit in Urdu dates prior to the eighteenth century. The vice-regal Court of Oudh was the great supporter of the Urdu literature and under its patronage Urdu has attained its position as the refined language of Upper India. With the rise of Urdu, the cultivation of Hindi was disparaged and in time the pure and impressive Hindi of Tulsidas—Kabirdas and Nabhaji—has given place to the artificial Hindi of the Sanscrit scholars—which is nothing but a collection of Sanscrit words linked together with Hindi particles. Works written in such language will never enrich the Hindi literature. There has arisen another class of Hindi—which is Urdu in Nagri character. The

works written in this style can hardly be classed in Hindi literature. Words of foreign origin should only be used when necessary. They should not be freely introduced to the sacrifice of the better understood and significant indigenous words.

The following work is the production of an educated Mahomedan gentleman in pure Hindi dialect. It was composed in Lucknow when Nawab Saadat Ali Khan was the reigning chief in this Province. Its author was Insha Allah Khan. According to Mr. Beale he was a poet and an author of four *divans*. Among his works "*Darai Latafat*" is of some reputation. His father was Masha Allah Khan. The author undertook to write a pleasant story in the dialect of the educated Hindus—elegant in style—impressive in diction—and written in such every day spoken words avoiding all words derived from Persian or Arabic, that even the unlearned may understand it without difficulty. A perusal of this book will show how far the learned author has succeeded in his desired object. Throughout the whole book no word of any foreign origin will be found except one word *laltain* (lantern) which is itself of disputed origin. The story selected by our author and the super human power introduced by him to complete his story may not commend themselves to the readers of modern novels in which human characters are depicted in their natural colours:—where human actions are delineated in the light of modern education and scientific knowledge—but the reader must bear in mind the period when

this work was composed and the state of the society in that age—to have a clear idea of the author's attainments. Mr. Chint says in his introduction to this book that it "is a magazine of Hindee words and phrases. Any foreigner desiring to obtain an accurate knowledge of the colloquial Hindi will find ample material is this book for his study."

Mr. Chint, Principal of La Martiniere College, Lucknow, published a portion of this book in 1852 in Vol. XXI of the Journal of the Asiatic Society of Bengal accompanied by an English translation. Rev. Mr. L. Slater, Senior Professor of Bishop's College, Calcutta completed the work and the translation in Vol. XXIV of the said Journal. The book was published by these learned gentlemen in the Persian character. Raja Shiva Prasad C. S. I. of Benares published an edition of this book in Nagri character compiled from the above named journal. But he made some unwarranted additions and alterations in the text and omitted portions here and there and in places changed its grammetical forms to suit the present state of the Hindi dialect. In his edition the headings and the text have been intermixed. So the author's work has not appeared in its original state. In preparing the present edition besides the above publications one Mss. copy of the book was also consulted and out of the different readings, the one keeping with the general style of the text has been retained. No portion of the text has been omitted except a few lines in the introductory portion

which disclosed the sectarian views of the author as to his tenet and the omission of which does not affect the work itself.

The publisher hopes that the work will be accepted by the general reader as a piece of light reading and the student will find in it a mine of words and sentiments and a glimpse into the inner life of the higher society a hundred years ago.

PUBLISHER.

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

कुँवर उदयभान चरित ॥
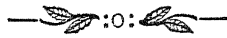
सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूं उस अपने बनानेवाले के साम्हने जिस ने हम सबको बनाया और बातकी बातमें वह सब कर दिखाया जिसका भेद किसीने न पाया। आतियां जातियां जो सांसें हैं। उसके बिन ध्यान सब यह फांसें हैं॥ यह कलका पुतला जो अपने उस खिलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाईमें क्यों पड़े और कड़ुवा कसैला क्यों हो। उस फलकी मिठाई चक्खै जो बड़ोंसे बड़े अगलोंने चक्खी है। देखनेको आखैं दीं और सुन्नेको यह कान दिये नाक भी ऊंची सबमें करदी मूरतोंको जी दान दिये मिट्टीके बासनको इतनी सकत कहां जो अपने कुम्हारके करतब कुछ बतासके। सच है जो बनाया हुवा हो सो अपने बनानेवालेको क्या सराहे और क्या कहे यों जिसका जी चाहे पड़ा बके। सिरसे लगा पांवतक जितने रोंवटे हैं जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और इतने बरस इसी ध्यानमें रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियां खेतमें हैं तौ भी कुछ न होसके।

इस सर झुकाने के साथही दिन रात जपताहूं उस दाता के पहुंचे हुये प्यारे को। जिस लिये यों कहा है। "जो तू न होता मैं कुछ न बनाता" और उसके चचेरा-भाई-जिसका-ब्याह-उस के घर हुआ

उसकी सुरत-मुझे लगरही है । मैं फूला अपने आप में नहीं समाता और जितने उनके लड़के बाले हैं उन्ही के यहां परचाव है ओर कोई-हो । कुछ मेरे जी को नहीं भाता जीते मरते उन्ही सबों का आसा और उन के घराने का रक्खताहूं तीसों घड़ी ।

डौल डाल एक अनोखी बात का ॥

एक दिन बैठे२ यह बात अपने ध्यानमें चढ़आई कि कोई कहानी ऐसी कहिये जिसमें हिन्दवी की उचट और किसी बोलसे निपट न मिले तव जाके मेरा जी फूलकी कलीके रूप खिले। बाहरकी बोली और गँवारी कछ उसके वीचमें न हो। अपने मिलनेवालोंमें से एक कोई बड़े पढ़े लिखे पुराने धुराने बूढ़े घाग यह खटराग लाये सिर हिलाकर मुँह ठठिया कर नाक भौं चढ़ाकर आंखें पथराकर लगे कहने यह बात होती दिखाई नहीं देती हिन्दवीपनभी न निकले, और भाखापनभी न घुसजाय, जैसे भले लोग अच्छोंसे अच्छ आपुसमें बोळते चालते हैं ज्यों का त्यों वही डौल रहे औ छांह किसीकी न पड़े यह नहीं होनेका मैंने इनकी ठण्ढी सांसकी फांसका टहोका खाकर झुंझळाकर कहा मैं कुछ ऐसा अनोखा बड़बोला नहीं जो राईको परबत कर दिखाऊं और झूठ सच बोलके उँगलियां नचाऊं और बेसुरी बेठिकानेकी उलझी सुलझी बातें सुझाऊं जो मुझसे न होसकता तो भला यह बात मुँहसे क्यों निकालता जिस ढबसे होता इस बखेड़ेको टालता ॥

इस कहानी का कहनेवाला यहां आपको जताता है और जैसा कुछ लोग उसे पुकारते हैं कह सुनाता है दहना हाथ मुंहपर फेरकर आप को जताता हूं जो मेरे दाताने चाहा तो वह तावभाव और आव जाव

और कूद फांद और लपट झपट दिखाऊं जो देखतेही आपके ध्यानका घोड़ा जो बिजलीसे भी बहुत चंचल उछलाहटमें हिरनोंके रूपमें अपनी चौकड़ी भूलजाय ॥

चौतुक्का ॥

घोड़े पर अपने चढ़के आताहूं मैं । करतब जो हैं सो सब दिखाताहूं मैं ॥
उस चाहनेवालेने जो चाहा तो अभी । कहता जो कुछहूं कर दिखाताहूं मैं ॥

अब आप कान रखके सन्मुख होके टुक इधर देखिये किस ढबसे बढ़ चलताहूं और अपने इन फूलकी पँखड़ी जैसे होठोंसे किस किस रूपसे फूल उगलता हूं ॥

कहानी का उभार और बोल चालकी दुल्हन का सिङ्गार ॥

किसी देसमें किसी राजाके घर एक बेटा था उसे उसके मा बाप और सब घरके लोग कुँवर उदयभान कहके पुकारते थे । सचमुच उसके जोबनकी जोतमें सूरजकी एक सूत आमिली थी उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसीके लिखने और कहनेमें आसके पन्दरह बरस भरके सोलहवें में पांव रक्खा था कुछ योंहीसी उसकी मसें भींगती चली थीं अकड़ मकड़ उसमें बहुतसी समारही थी किसीको कुछ न समझता था पर किसी बातके सोचका घरघाट पाया न था और चाव की नदी का पाट उसने देखा न था एक दिन हरियाली देखनेको अपने घोड़े पर चढ़के अठखेलपन और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था इतनेमें एक हिरनी जो उसके

साम्हने आई तो उसका जी लोट पोट हुआ उस हिरनीके पीछे सबको छोड़छाड़ कर घोड़ा फेंका भला कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छुपगया और हिरनी आंखोंसे ओझलहुई तबतो यह कुँवर उदयभान भूखा प्यासा और उदासा जँभाइयां और अँगड़ाइयां लेता हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूंढने इतनेमें कुछ अमरइयां ध्यान चढ़ी उधर चलनिकला तो क्या देखता है चालीस पचास रण्डियां एकसे एक जोबनमें अगली झूला डाले हुए पड़ी झूलरही हैं और सावन गातियां हैं जो उन्हों ने उसको देखा तू कौन तू कौनकी चिंघाड़सी पड़गई।

दोहा। कोई कहती थी यह उचक्का है। कोई थी कहती एक पक्का है ॥

उन सबोंमेंसे एकके साथ इसकी आंख लड़गयी ॥ वही झूलने वाली लाल जोड़ा पहनेहुए जिसको सबरानी केतकीकहते थे उसकेभी जीमें इसकी चाहने घरकिया पर कहने सुन्ने को उसने बहुतसी नाहनूहकी इस लग चलनेको भला क्या कहतेहैं और कहा जो तुमझटसे टपकपड़े यह न जाना जो यहां रण्डियां अपने झूलरही हैं अजी तुम जो इस रूप के साथ बेधड़क चलेआये हो! ठण्डी ठण्ढी छांह चले जाओ। तब उन्हों ने मसोस के मलोळा खाके कहा इतनी रुखाइयां न दीजिये। मैं सारे दिन का थका हुआ एक पेड़ की छांह में ओस का बचाव करके पड़ रहूंगा बड़े तड़के धुन्धलके उठकर जिधर मुंह पड़ेगा चला जाऊंगा। किसी का लेता देता नहीं। एक हिरनी के पीछे सब लोगों को छोड़ कर घोड़ा फेंका था जब तळक उजाला रहा उसी के ध्यान में था। जब अंधेरा छागया और जी बहुत घबरागया इन अमरइयों का आसरा ढूंढ़कर यहां चला आया हूं। कुछ रोक टोक तो न थी जो माथा ठनक जाता और रुक रहता। सिर उठाये हांपता हुआ चला आया

क्या जानता था पद्मनियां यहां पड़ी झूलती पींगें चढ़ा रहीं हैं पर योंही बदी थी बरसों मैं भी झूला करूंगा । यह बात सुनकर जो लाल जोड़े वाली सब की सिरधरी थी उसने कहा हां जी बोलियां ठोळियां न मारो । इन को कह दो जहां जी चाहे अपने पड़ रहें और जो कुछ खाने पीने को मांगें सो इन्हें पहुंचा दो । घर आये को किसी ने आज तक मार नहीं डाला इनके मुंह का डौल गाल तमतमाये और हौंठ पड़पड़ाये और घोड़े का हांपना और जी का कांपना और घबरा-हट और थरथराहट और ठण्डी सांसें भरना और निढाल होकर गिरे पड़ना इनको सच्चा करता है । बात बनाई और सचौटी की कोई छुपती है ! पर हमारे और इनके बीच में कुछ ओटसी कपड़े लत्ते की कर दो । इतना आसरा पाके सब से परे कोने में जो पांच सात छोटे छोटे पौदे से थे उनकी छांह में कुंवर उदयभान ने अपना बिछोना किया सिरहाने हाथ धरके चाहता था सो रहे पर नींद कहीं चाहत की लगावट में आती थी ? पड़ा पड़ा अपने जी से बातें कर रहा था । इतने में क्या होता है जो रात सांय सांय बोळने लगती है और साथ वालियां सब सो रहती हैं रानी केतकी अपनी सहेली मदनबान को जगाकर यों कहती है अरी तूने कुछ सुना है मेरा जी उस पर आगया और किसी डौल से नहीं थम सकता । तू सब मेरे भेदों को जानती है । अब जो होनी हो सो हो । सिर रहता रहे जाता जाय मैं उस के पास जाती हूं । तू मेरे साथ चल पर तेरे पांव पड़ती हूं कोई सुनने न पावे । अरी यह मेरा जोड़ा मेरे और उस के बनानेवाळे ने मिळा दिया । मैं इसी लिये इन अमरइयों में आयी थी । रानी केतकी मदनबान का हाथ पकड़े वहां आ पहुंचती है जहां कुंवर उदयभान लेटे हुए कुछ सोच में पड़े पड़े बड़बड़ा रहे

थे । मदनबान आगे बढ़के कहने लगी तुम्हें अकेला जान के रानी जी आप आई हैं । कुंवर उदयभान यह सुनके उठ बैठे और यह कहा क्यों न हो । जीको जीसे मिलाप है । कुँवर और रानी दोनों चुपचाप बैठे थे । पर मदनबान दोनोंके बदन गुदगुदा रही थी । होते २ अपने २ पते सबने खोले । रानीका पता यह खिला । राजा जगतपरकासकी बेटी है । और उनकी मा रानी कामलता कहाती हैं । इनको इनके मा बाप ने कह दिया है एक महीने पीछे अमरइयों में जाके झूल आया करो आज वही दिन था जो तुम से मुठभेड़ हो गयी । बहुत महाराजों के कुंवरों की बातें आयी पर किसी पर इनका ध्यान न चढ़ा तुम्हारे धन्य भाग्य जो तुम्हारे पास सब से छुपके मैं जो इनकी लड़कपन् की गुइयां हूं मुझे अपने साथ लेके आई हैं । अब तुम अपनी कहानी कहो कि तुम किस देस के कौन हो उन्होंने कहा मेरा बाप राजा सूरजभान और मा रानी लछमीबास हैं । आपुस में जो गठजोड़ा हो जाय तो अनोखी अचरज और अचम्भे की बात नहीं योंहीं आगे से होती चली आई है । जैसा मुंह वैसा थपेड़ा जोड़ तोड़ टटोल लेते हैं । दोनों महाराजों को यह चित्त चाही बात अच्छी लगेगी । पर हम तुम दोनों के जीका गठजोड़ा चाहिये । इसमें मदनबान बोल उठी सो तो हुआ अब अपनी २ अंगूठियां हेर फेर करलो और आपुसमें लिखौटी भी लिखदो फिर कुछ हिचर मिचर न रहे । कुँवर उदयभान ने अपनी अंगूठी रानी केतकी को पहनादी । और रानी केतकी ने अपना छल्ला कुँवर उदयभानकी उँगलीमें डाल दिया । और एक धीमीसी चुटकी लेली । इसमें मदनबान बोल उठी जो सच पूछो तो इतनी भी बहुत हुई इतना बढ़ चलना अच्छा नहीं मेरे सिर चोट है । अब उठ चलो और इनको सोनेदो और रोवें पड़े रोनी । बात चीत तो ठीक हो

चुकी थी पिछले पहरसे रानी तो अपनी सहेलियों को लेके जिधर से आयी थीं उधर चली गयीं और कुँवर उदयभान अपने घोडेकी पीठ लगकर अपने लोगोंसे मिलके अपने घर पहुंचे ॥ कुँवरजीका अनूप रूप क्या कहूं। कुछ कहनेमें नहीं आता। खाना न पीना न लगचलना न किसी से कुछ कहना न सुन्ना जिस ध्यानमें थे उसीमें गुथे रहना और घड़ी २ कुछ २ सोच २ सिर धुन्ना। होते २ इस बात की लोगोंमें चर्चा फैल गयी। किसी किसीने महाराज और महारानी से भी कहा कुछ दालमें काला है। वह कुँवर उदयभान जिससे तुम्हारे घरका उजाला है इन दिनों कुछ उसके बुरे तेवर और बेडौल आंखें दिखाई देती हैं। घरसे बाहर पांव नहीं धरता। घरवालियां जो किसी डौलसे बहलातियां हैं तो कुछ नहीं करता एक ऊंची सांसलेता है और जो बहुत किसीने छेडा तो छपरखट पर जाके अपना मुहँ लपेट के आठ आठ आंसू पड़ा रोता है। यह सुनतेही मा बाप कुँवरके पास दौडे आये। गले लगाया मुंह चूमा पांव पर बेटेके गिरपडे हाथ जोड और कहा जो अपने जी की बात है सो कहते क्यों नहीं क्या दुखडा है जो पडे पडे कराहते हो राजपाट जिसको चाहो देडालो कहो तो तुम क्या चाहते हो तुम्हारा जी क्यों नहीं लगता? भला वह है क्या जो हो नहीं सकता मुंह से बोलो जी खोलो जो कहने में कुछ सुचकते हो तो अभी लिख भेजो जो कुछ लिखोगे ज्यों की त्यों वही कर तुम्हें दियेजावेंगे जो तुम कहो कूये में गिरपड़ो तो हम दोनों अभी कूयेमें गिरपडते हैं। कहो सिर काटडालो तो सिर अपने काट डालतेहैं कुंवर उदयभान वह जो बोलतेही न थे लिखभेजनेका आसरा पाके इतना बोले अच्छा आप सिधारिये मैं लिख भेजता हूं पर मेरे उस लिखभेजनेको मेरे मुंहपर किसी ढबसे न लाना। नहीं तो मैं बहुत लजा-

ऊंगा इसीलिये मुखबात होकर मैंने कुछ न कहा और यहलिखभेजा "अब जो मेरा जी नाक में आगया और किसी ढब न रहागया और आप ने मुझे सौ २ रूपसे खोला और बहुतसा टटोला तबतो लाज छोडके हाथ जोडके मुंहको फोडके विधियाके यह लिखताहूं जगमें चाहके हाथों किसी को सुख नहीं है भला वह कौन है जिसको दुख नहीं। वह उस दिन जो मैं हरयाली देखनेको गया था वहां जो मेरे साम्हने एक हिरनी कनौटियां उठाये हुए होली थी उसके पीछे मैंने घोडा बगछुट फेंका जबतक उजाला रहा उसीकी धुनमें चलागया जब अंधेरा होगया और सूरज डूबा तब जी मेरा बहुत उदासहुआ अमरइयां ताकके मैं उनमें गया तो उन अमरइयोंका पत्ता २ मेरे जीका गाहक हुआ । वहांका यह सुफल है कुछ रण्डियां झूला झूल रही थीं उन सबकी सिरधरी कोई रानी केतकी महाराजा जगतपरकासकी बेटी हैं उन्होंने यह अंगूठी अपनी मुझे दी और मेरी अगूठी उन्होंने लेली और लिखौट भी लिख दी। सो यह अंगूठी उनकी लिखौट समेत मेरे लिखेहुएके साथ पहुंचती है आप देखलीजिये और जिसमें बेटेका जी रहजाय वह कीजिये" महाराज और महारानी उस बेटेके लिखेहुए पर सोनेके पानीसे यों लिखते हैं "हम दोनोंने उस अंगूठी और लिखौटको अपने आंखोंसे मला अब तुम अपने जीमें कुछ कुढ़ो मत जो रानी केतकीके मा बाप तुम्हारी बात मानते हैं तो हमारे समधी और समधन हैं दोनों राज एक होजावें और जो कुछ नाहनूहकी ठहरेगी तो जिस डौलसे बन आवेगा ढाल तलवार के बल तुम्हारी दुल्हन हम तुमसे मिळावेंगे आजसे उदास मत रहाकरो खेलो कूदो बोलो चालो आनन्दें करो। हम अच्छी घडी शुभ महूरत शोचके तुम्हारी सुसरालमें किसी बाम्हनको भेजते हैं जो बात चितचाही ठीक करलावे" बाम्हन जो शुभघडी देखके हडबडीसे गया

था उसपर बड़ी कड़ी पड़ी । सुन्तेही रानी केतकी के मा बापने कहा उनके हमारे नांता नहीं होने का उनके बाप दादे हमारे बाप दादे के आगे सदा हाथ जोड़ के बातें करते थे और जो टुक तेवरी चढ़ी देखते थे तो बहुत डरते थे क्या हुआ जो अब वह बढ़गये और ऊंचे पर चढ़गये जिसके माथे हम बांयें पांव के अंगूठे से टीका लगावें वह महाराजों का राजा हो जाय किसका मुँह जो यह बात हमारे मुँह पर लाये बाम्हन ने मनमें जल भुन के कहा अगले भी इसी बिचार में थे और भरी सभा में यही कहते थे हम में उनमें कुछ गोत का तो मेल नहीं है पर कुँवर की हठ से कुछ हमारी नहीं चलती नहीं तो ऐसी ओछी बात कब हमारे मुँह से निकलती यह सुनतेही महा-राज ने उस ब्राम्हन के सिर पर फूलों की छड़ी फेंक मारी और कहा जो बाम्हन की हत्या का धड़का न होता तो तुझको अभी चक्की में दलवा डालता इसको लेजाओ और एक अंधेरी कोठरी में मूंद रक्खो जो इस बाम्हन पर बीती सो सब कुँवर उदयभान के मा बाप ने सुन्तेही लड़ने की ठान अपना ठाठ बांधकर दल बादल जैसे घिर आते हैं चढ़ आया। जब दोनों महाराजों में लड़ाई होने लगी रानी केतकी सावन भादों के रूपसे रोने लगी और दोनों के जी पर यह आगयी। यह कैसी चाहत है जिसमें लहू बरसने लगा और अच्छी बातों को जी तरसने लगा । कुँवर ने चुपके से यह लिख भेजा "अब मेरा कलेजा टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है दोनों महाराजों को आपस में लड़ने दो किसी डौलसे जो हो सके तो तुम मुझे अपने पास बुलालो हम तुम दोनों मिलके किसी और देस को निकल चलें जो होनी हो सो हो सिर रहता रहे जाता जाव" एक मालन जिसको फूलकली कर सब पुकारते थे उसने कुँवर की चिट्ठी किसी फूल पँखड़ी में लपेट सपेट के रानी केतकी

तक पहुँचा दी । रानी ने उस चिट्ठी से आंखें अपनी मलीं और मालन को एक थाल भरके मोती देकर उस चिट्ठी की पीठ पर अपने मुँहकी पीकसे यह लिखा "ऐ मेरे जी के गाहक जो तू मुझे बोटी २ कर चील कउवे को देडाले तो भी मेरी आंखों को चैन और कलेजे में सुख होवे पर यह बात भाग चलने की अच्छी नहीं । डौल से बेटा बेटी के बाहर है । जी तुझसे प्यारा नहीं एक तो क्या जो करोर जी जाते रहैं पर भागने की बात कोई हमैं रुचती नहीं"। यह चिट्ठी पीक भरी जो कुँवर तक जा पहुँचती है उस पर कई सोने के थाल हीरे मोती पुखराज के खचाखच भरे हुए निछावर करके लुटा देता है और जितनी उसकी बेकली थी चौगुनी होजाती है और उस चिट्ठी को अपने गोरे दण्ड पर बांध लेता है ॥

आना जोगी महेन्दरगिर का कैलास परबत से और हिरन हिरनी कर डालना कुँवर उदयभान और उसके मा बाप का ।

जगतपरकास अपने गुरु को जो कैलास पहाड़ पर रहता था यों लिख भेजता है "कुछ हमारी सहाय कीजिये महा कठिन हम बिपता मारों को पड़ी है राजा सूरजभान को अब यहां तक बावभक ने लिया है जो उन्हों ने हमसे महाराजों से नाते का डौल किया है"। कैलास पहाड़ एक डाल चांदी का है । उस पर राजा जगतपरकास का गुरू जिसको इन्द्रलोक के लोग सब महेन्दरगिर कहते थे ध्यान ज्ञान में कोई नब्बे लाख अतीतों के साथ ठाकुर के भजन में दिन रात रहा करता था । सोना रूपा तांबे रांगे का बनाना तो क्या और गुटका

मुंह में लेके उड़ना वेरे रहे उसके और और बातें इस इस ढब की ध्यान में थीं जो कुछ कहने और सुन्ने से बाहर हैं । मेंह सोने और रूपे का बरसा देना और जिस रूपमें चाहना हो जाना । सब कुछ उसके आगे एक खेल था और गाने में और वीन बजाने में महादेव जी छुट सब उसके आगे अपने कान पकड़ते थे । सरस्वती जिसको हिन्दू कहते हैं आदिशक्ति उन्ने उसी से कुछ कुछ गुनगुनाना सीखा था । उसके साम्हने छ राग छत्तीस रागनियां आठ पहर बंधुवों का सा रूप धरे हुए उसकी सेवा में हाथ जोड़े खड़ी रहती थीं वहां अतीतों को यह कहकर पुकारते थे भैरोंगिर विभासगिर हिण्डोलगिर मेघनाथ किदारनाथ दीपक दास जातीसरूप सारङ्गरूप और अतीतनें इस ढब से कहलाती हैं गूजरी टोड़ी असावरी गौरी मालसिरी बिला-बल । जब चाहता था अधर में सिङ्गासन पर बैठ के उड़ाये फिरता था और नव्वे लाख अतीत गुटके अपने मुंहमें लिये हुए गेरुवे बस-तर पहने हुए जटा बिखोरे उसके साथ होते थे । जिस घड़ीं राजा जगतपरकास की चिट्ठी एक बगला ले पहुंचता है जोगी महे-न्दरागिर एक चिंघाड़ मार के दल बादलों को ढलका देता है बाघंबर पर बैठ भभूत अपने मुंहमें मल कुछ कुछ पढ़न्त करता हुआ पवन के घोड़े की पीठि लगा और सब अतीत मृगछालों पर बैठे हुए गुटके मुंहमें लिये हुए बोल उठे गोरख जागा एक आंख की झपक में वहां आन पहुंचता है जहां दोनों महाराजों में लड़ाई हो रही थी । पहले तो एक काली आंधी आयी फिर ओले बरसे फिर एक बड़ी आंधी आयी किसीं को अपनी सुध बुध न रही । हाथी घोड़े और जितने लोग और भीड़ भाड़ राजा सूरजभान की थी कुछ न समझा गया किधर गयी और इन्हें कौन उठा लेगया और राजा जगतपरकास के

लोगों पर और रानी केतकी के लोगों पर केवड़े की बूंदों की नन्ही नन्ही फुहार सी पड़ने लगी। जब यह सब कुछ हो चुका तो गुरूजी ने अपने अतीतों से कहदिया उदयभान सूरजभान लछमीवास इन तीनों को हिरन हिरनी बना के किसी बनमें छोड़ दो और जो इनके साथी हों उन सभोंको तोड़ फोड़ दो। जैसा कुछ गुरूजीने कहा झट-पट वैसा ही किया। बिपत का मारा कुंवर उदयभान और उसका बाप वह महाराजा सूरजभान और उसकी मा वह महारानी लछमीवास हिरन हिरनी बन बन की हरी हरी घास कई बरस तक चुगते रहे और उस भीड़ भड़क्के का तो कुछ थल बैड़ा न मिला जो किधर गयी और कहां थी ॥ यहां की यहां ही रहने दो आगे सुनो अब रानी केतकी की बात और महाराजा जगतपरकास की सहनी इनका घरका घर गुरूजी के पावों पर गिरा और सबने सिर झुका कर कहा महाराज यह आपने बड़ा काम किया हम सब को रख लिया जो आज न आप पहुंचते तो क्या रहा था सब ने मरमिटने की ठान ली थी। इन पापीयों से कुछ न चलेगी यह जानली थी। राजपाट सब हमारा अब निछावर करके जिसको चाहिये दे डालिये हम सब को अतीत बना के अपने साथ लीजिये राज हमसे नहीं थमता सूरजभान के हाथ से आपने बचाया अब कोई इनका चचा चन्दरभान चढ़ आवेगा तो क्योंकर बचना होगा अपने आप में तो सकत नहीं फिर ऐसे राजा का फिट्ट मुंह हम कहां तक आप को सताया करेंगे यह सुनकर जोगी महेन्दर-गिरं ने कहा तुम सब हमारे बेटे बेटी हो आनन्दें करो दनदनावो सुख चैनसे रहो ऐसा वह कौन है जो तुम्हें आंख फेर और ढबसे देख सके यह बाघम्बर और यह भभूत हमने तुम्हें दिया आगे जो कुछ ऐसी गाढ़ पड़े तो इस बाघम्बर में से एक रोंगटा तोड़ कर आग पर धर के

फूंक दीजियो वह रोंगटा फुकने न पावेगा हम आन पहुंचेंगे रहा भभूत सो इस लिये है जो कोई चाहे जब इसे अञ्जन करे वह सब कुछ देखे और उसे कोई न देखे जो चाहे करले गुरू महेन्दरगिर जिसके पांव पूजिये और धन्न महाराज कहिये उन से तो कुछ छुपाव न था महाराजा जगतपरकास उन को मोरछल करते हुए रानियों के पास ले गये सोने रूपे के फूल में हीरे मोती गोद भर भर सबने निछावर किये और माथे रगड़े इन्हों ने सब की पीठें ठोंकीं रानी केतकी ने भी दण्डवत की पर जी ही जी में गुरूजी को वहुत सी गालियां दीं गुरूजी सात दिन सात रातें यहां रहके राजा जगतपरकास को सिंहासन पर बैठाके अपने उस बाघम्बर पर उसी डौल से कैलास पहाड़ पर आ धमके राजा जगतपरकास अपने अगले से ढब से राज करने लगा ॥

रानी केतकी का मदनबान के आगे रोना और पिछली बातों का ध्यान करके जी से हाथ धोना अपनी बोलीकी धुनमें ॥

रानी को बहुतसी बेकली थी । कब सूझती कुछ भली बुरी थी ॥
चुपके चुपके कराहती थी । जीना अपना न चाहती थी ॥
कहती थी कभी अरी मदनवान । है आठ पहर मुझे वही ध्यान ॥
यहां प्यास किसे भला किसे भूख । देखूं हुं वाही हरे हरे रूख ॥
टपके का डर है अव यह कभी । चाहत का घर है अब यह कभी ॥
अमरइयों में उनका वह उतरना । और रात का सांय सांय करना ॥
और चुपके से उठ के मेरा जाना । और तेरा वह चाह का जताना ॥
उनकी वह उतार अंगूठी लेनी । और अपनी अंगूठी उनको देनी ॥

आंखों में मेरे वह फिर रही है। जी का जो रूप था वही है ।।
क्योंकर उन्हें भूलूं क्या करूं मैं। कबतक मा बाप से डरूं मैं ।।
अब मैंने सुना है ऐ मदनबान । बन बनके हिरन हुए उदयभान ।।
चरते होंगे हरी हरी दूब । कुछ तूभी पसीज सोच में डूब ।।
मैं अपनी गई हुं चौकड़ी भूल । मत मुझको सुंघाय डहडहे फूल ।।
फूलों को उठाके यहां से लेजा । सौ टुकड़े हुआ मेरा कलेजा ।।
बिखरे जी को न कर इकट्ठा । एक घास का लाके रखदे गट्ठा ।।
हरयाली उसी की देखलूं मैं । कुछ और तो तुझको क्या कहूं मैं ।।
इन आंखों में है भड़क हिरनकी । पलकें हुईं जैसे घास बनकी ।।
जब देखिये डबडबा रही हैं । ओसें आसूं कि छा रही हैं ।।
यह बात जो जीमें गड़गई है । एक ओससी मुझपै पड़ गई है ।।

इसी डौलसे जब अकेली होती थी तब मदनबान के साथ ऐसेही मोती पिरोती थी ।।

भभूत मांगना रानी केतकी का अपनी मा रानी कामलता से आंखमिचौवल खेलने के लिये और रूठ रहना और राजा जगतपरकास का बुलाना और प्यार से कुछ कुछ कहना और वह भभूत देना ।।

एक रात रानी केतकी अपनी मा रानी कामलता को भुलावे में डाल यह पूछा गुरू जी गुसाईं महेन्दरगिर ने जो भभूत बाप को दिया था वह कहां रक्खा हुआ है और उससे क्या होता है उस की मा ने कहा मैं तेरी वारी ! तू क्यों पूछती है रानी केतकी कहने लगी

आंख मिचौवल खेलने के लिये चाहती हूं जब अपनी सहेलियों के साथ खेलूं और चोर बनूं तो कोई मुझको पकड़ न सके रानी कामलता ने कहा वह खेलने के लिये नहीं है । ऐसे लट्के किसी बुरे दिन को सँभाल को डाल रखते हैं क्या जानें कोई घड़ी कैसी है कैसी नहीं । रानी केतकी अपनी मा की इस बात से अपना मुंह ठिठा के उठ गई और दिनभर विन खाये पीये पड़ी रही । महाराज ने जो बुलाया तो कहा मुझे रुचि नहीं । तब रानी कामलता बोल उठी अजी तुम ने कुछ सुना भी बेटी तुम्हारी आंखमिचौवल खेलने के लिये वह भभूत गुरूजीका दिया हुआ मांगती थी मैंने न दिया और कहा लड़की यह लड़कपन की बातें अच्छी नहीं किसी बुरे दिन के लिये गुरूजी देगये हैं इसी पर मुझसे रूठी है बहुतेरा भुलाती फुसलाती हूं मान्ती नहीं, महाराजने कहा भभूत तो क्या मुझे तो अपना जी भी इससे प्यारा नहीं इस के एक घड़ी भरके बहल जाने पर एक जी तो क्या जो लाख जी हों तो दे डालिये । रानी केतकी को डिबिया में से थोड़ासा भभूत दिया । कई दिन तक आंखमिचौवल अपने मा बाप के साम्हने सहेलियों के साथ खेलती सब को हँसाती रही जो सौ सौ थाल मोतियों के निछावर हुआ किये क्या कहूं एक चुहल थी जो कहिये तो करोरों पोथियों में ज्यों की त्यों न आ सके॥

रानी केतकी का चाहत से बेकल हो उभरना और मदनबान का साथ देने से नहीं करना॥

एक रात रानी केतकी उसी ध्यान में अपने मदनबान से बोल उठी अब मैं निगोड़ी लाज से कट् गिरती हूं तू मेरा साथ दे मदन-

बान ने कहा क्यों कर। रानी केतकी ने वह भभूत का लेना उसे चिताया और यह सुनाया सब यह अंखमिचौवल की चुहलें मैंने इसी दिन के लिये कर रक्खी थीं। मदनबान बोली मेरा कलेजा थरथराने लगा मैं यह माना तुम अपनी आंखों में इस भभूत का अंजन करलोगी और मेरे भी लगादोगी तो हमें तुम्हें कोई न देखेगा और हम तुम सब को देखेंगे पर ऐसे हम कहां से जी चले हैं जो बिन लिये साथ जोबन साथ बन बन भटका करें और हिरनों के सींगों में दोनों हाथ डाल के लटका करें और जिसके लिये यह सब कुछ है सो वह कहां और होवे तो क्या जाने जो यह रानी केतकी जी और यह मदनबान निगोड़ी नुची खसोटी इन की सहेली है चूल्हे भाड़ में जाय यह चाहत जिस के लिये मा बाप राज पाट सुख नींद लाज छोड़ कर नदी के कछारों में फ़िरना पड़े सोभी बेडौल जो वह अपने रूपमें होते तो भला थोड़ा बहुत कुछ आसरा था न जी यह हमसे न होसकेगा। महाराज जगत परकास और महारानी कामलता का हम जान बूझ कर घर उजाड़ें और बहका के उनकी बेटी जो इकलौती लाड़ली है उसको लेजावें और जहां तहां भटकावें और बनासपती खिलावें और चेड़े को हिलावें ए जी उस दिन तुम्हें यह बूझ न आयी थी जब तुम्हारे और उसके मा बाप में लड़ाई होरही थी उसने उस मालनके हाथ तुम्हें लिख भेजा था भागचलें तब तो अपने मुँहकी पीकसे उसकी चिट्ठी की पीठ पर जो लिखा था सो क्या भूलगयी तबतो वह ताव भाव दिखाया था अब जो वह कुँवर उदयभान और उनके मा बाप तीनों जने बन बन के हिरन हिरनी बने हुए क्या जानिये किधर होंगे उन के ध्यान पर माटी डाल दो नहीं तो पछतावोगी और अपना किया पावोगी मुझसे तो कुछ न हो सकेगा तुम्हारी कुछ अच्छी बात होती तो जीते जी मेरे मुँह से न

निकलती पर यह बात मेरे पेट में नहीं पच सकती तुम अभी अल्हड़ हो तुम ने कुछ देखा नहीं जो इसी बात पर तुम्हें सचमुच ढलता हो तो देखूंगी तुम्हारे मा बाप से कहकर वह भभूत जो वह मुवा निगोड़ा भूत मछन्दर का पूत अवधूत दे गया है हाथ मरोड़वाकर छिनवा लूंगी । रानी केतकी ने यह रुखाइयां मदनबान की सुनकर हंस के टालदिया और कहा जिसका जी हाथमें न हो उसे ऐसी लाखों सूझती हैं पर कहने और करने से बहुत सा फेर है यह भला कोई अंधेर है जो मा बाप को छोड़ हिरनों के पीछे दौड़ती करछाल मारती फिरूं पर अरी तू बड़ी वावली चिड़िया है जो तूने यह बात ठीकठाक कर जानली और मुझसे लड़ने लगी ॥

रानी केतकी का भभूत आंखोंमें लगाकर घर से बाहर निकल जाना और सब छोटों बड़ों का तलमलाना ।

दस पन्दरह दिनके पीछे एक रात रानी केतकी मदनबान के विन कहे वह भभूत आंखों में लगाकर घर से बाहर निकल गयी कुछ कहने में नहीं आता जो मा बाप पर हुई सब ने यह बात ठहरा दी गुरूजी ने कुछ समझकर रानी केतकी को अपने पास बुला लिया होगा महाराज जगतपरकास और महारानी कामलता राजपाट सब कुछ इस बियोग में छोड़छाड़ पहाड़ की चोटी पर जा बैठे और केसी को अपने लोगों में से राज थामनेके लिये छोड़ गये तब मद-नबान ने सब बातें खोलीं रानी केतकी के मा बाप ने यह कहा अरी मदनबान जो तू भी उसके साथ होती तो एकसे दो भली थी अब

जो वह तुझे लेजावे तो कुछ हिचर मिचर न कीजियो उसके साथ हो लीजियो जितना भभूत है तू अपने पास रख हम क्या इस राख को चूल्हे में डालेंगे गुरूजी ने तो दोनों राजों का खोज खो दिया कुँवर उदयभान और उसके मा बाप दोनों अलग हो रहे जगतपरकास और कामलता को यों तलपट किया भभूत न होता तो यह काहेको साम्हने आतीं। निदान मदनबान भी उनके ढूंढने को निकली अंजन लगाये हुए रानी केतकी कहती हुई चली जाती थी बहुत दिनों पीछे कहीं रानी केतकी भी हिरनों की डारों में उदयभान उदयभान चिंघाड़ती हुई आ निकली ज्यों एक को एक ने ताड़कर यों पुकारा अपनी अपनी आंखें धो डालो एक डबरे पर बैठ के दोनों की मुठभेड़ हुई गले मिलके ऐसी रोईं जो पहाड़ों में कूकसी पड़ गयी ॥

दोहा अपनी बोली का।

छागई ठण्डि सांस झाड़ों में । पड़गई कूकसी पहाड़ों में ॥

दोनों जनीं एक टीले पर अच्छी सी छांह ताड़ के आ बैठीं अपनी अपनी बातें दोहराने लगीं ।

बात चीत मदनबान की रानी केतकी के साथ।

रानी केतकी ने अपनी बीती सब कही और मदनबान वही अगला झींखना झींखा की और उनके मा बाप ने उनके लिये जो जोग साधा था और वियोग लिया था सब कहा जब मदनबान यह सब कुछ कहचुकी तो फिर हँसने लगी रानी केतकी यह दोहा लगी पढ़ने ॥

हम नहिं हंसने रुकते जिसका जी चाहे हंसे।
है वही अपनी कहावत आफँसे जी आफँसे॥
अब तो अपने पीछे सारा झगड़ा झांटा लग गया।
पांव का क्या ढूंढती है जी में कांटा लग गया॥

मदनबान से कुछ रानी केतकी के आंसू पुछते से चले उनने यह बात ठहरायी जो तुम कहीं ठहरो तो मैं तुम्हारे उन उजड़े हुए मा बाप को चुपचाप यहीं ले आउं और उन्हीं से इस बात को ठहराऊं गुसांईं महेन्दरगिर जिसके यह सब करतूत हैं वह भी उन्हीं दोनों उजड़े हुओं की मुठ्ठी में हैं अभी जो मेरा कहा तुम्हारे ध्यान चढ़े तो गये हुए दिन फिर फिर सकते हैं पर तुन्हारे कुछ भावे नहीं हम क्या पड़े बकते हैं मैं इस पर बीड़ा उठाती हूं बहुत दिनों में रानी केतकी ने इस पर अच्छा कहा और मदनबान को अपने मा बाप के पास भेजा और चिट्ठी लिख भेजी जो आप से कुछ हो सके तो उस जोगी से यह ठहराके आवें।

महाराज और महारानी के पास मदनबान का फिर आना और चित चाही बात सुनाना।

मदनबान रानी केतकी को अकेला छोड़कर राजा जगतपरकास और रानी कामलता जिस पहाड़ पर बैठे हुए थे वहां झट से आदेस करके आ खड़ी होती है और कहती है लीजे आप का घर नये सिर से बसा और अच्छे दिन आये रानी केतकी का एक बाल भी बीका नहीं हुआ उन्हीं के हाथ की चिट्ठी लायी हूं आप पढ़ लीजिये आगे जो चाहिये सो कीजिये। महाराज ने उसी बाघम्बर में से एक रोंघटा तोड़-

कर आग पर धर दिया बात की बात में गुसाईं महेन्दरगिर आ पहुंचे और जो कुछ यह नया स्वाँग जोगी जोगन का आया था आंखों देखा सब को छाती से लगाया और कहा बाघम्बर तो इसी लिये मैं सौंप गया था जो तुम पर कुछ होवे तो इसका एक रोंघटा फूंक दीजो तुम्हारे घर की यह गति होगयी अब तक तुम क्या कर रहे थे और किन नींदों सो रहे थे पर तुम क्या करो वह खिलाड़ी जो रूप चाहे सो दिखावे जो जो नाच चाहे सो नचावे भभूत लड़की को क्या देना था हिरन हिरनी उदयभान और सूरजभान उसके बाप को और लछमीबास को मैंने किया था मेरे आगे उन तीनों को जैसा का तैसा करना कुछ बड़ी बात न थी अच्छा हुई सो हुई अब चलो उठो अपने राज पर विराजो और ब्याह के ठाठ करो अब तुम अपनी बेटी को समेटो कुँवर उदयभान को मैंने अपना बेटा किया और उसको लेके मैं ब्याहने चढूंगा महाराज यह सुनते ही अपने राज की गद्दी पर आ बैठे और उसी घड़ी कह दिया सारी छतों को और कोठों को गोटे से मढ़लो और सोने रूपे के सुनहरे रुपहरे सब झाड़ और पहाड़ों पर बांध दो और पेड़ों में मोती की लड़ियां गूंधो और कहदो चालीस दिन चालीस रात तक जिस घर नाच आठ पहर न रहेगा उस घरवाले से मैं रूठ रहूंगा और जानूंगा यह मेरे दुख सुख का साथी नहीं छ महीने जब कोई चलनेवाला कहीं न ठहरे और रात दिन चला जाय इस हेर फेर में वह राज सब कहीं था यही डौल हो गया ।

जाना महाराज और महारानी और गुसाईं महेन्दरगिर का रानी केतकी के लेने के लिये ।

फिर गुरूजी और महाराज और महारानी मदनबान के साथ वहां आपुहुंचे जहां रानी केतकी चुपचाप सुन खैंचे बैठी थी गुरूजी ने रानी

केतकी को अपनी गोद में लेके कुँवर उदयभान का चढ़ावा चढ़ा दिया और कहा तुम अपने बाप के साथ अपने घर सिधारो अब मैं अपने बेटे कुँवर उदयभान को लिये आता हूं गुरूजी गुसाईं जिनको दण्डवत है सो तो यों सिधारते हैं आगे जो होगी सो कहने में आवेगी यहां की यह धूमधाम और फैलावा अब ध्यान कीजिये महाराजा जगतपरकास ने अपने सारे देसमें कहा यह पुकारदे जो यह न करेगा उसकी बुरी गत होगी गांव में आमने सामने तिरपौलिये बना बना के सूहे कपड़े उनपर लगादो और गोट धनक की और गोखरू रुपहरे सुनहरे किरनें और डांक टांक टांक रक्खो और जितने बड़ पीपल के पुराने पुराने पेड़ थे जहां जहां हों उन पर गोटों के फूलोंके सिहरे हरी भरी बड़ी ऐसे जिसमें सिर से लगा जड़ तलक उनकी थलक और झलक पहुंचे बांध दो ॥

॥ चौतुका ॥

पौदों ने रंगा के सूहे जोड़े पहने। सब पांउ में डालियों ने तोड़े पहने ॥
बूटे बूटे ने फूल फल के गहने। जो बहुत न थे तो थोड़े थोड़े पहने ॥

जितने डहडहे और हरियावल में लहलहे पात थे सबने अपने अपने हाथ में चुहचही मिहँदी को रचावट सजावट के साथ जितनी समावट में समा सकी करली और जहां तलक नवल ब्याही दुल्हन नन्हीं नन्हीं फलियों की और सुहागनें नयी नयी कलियों की जोड़े पखड़ियों के पहने हुए थीं सब ने अपनी अपनी गोद सुहागप्यार की फूल और फलों से भरलीं और तीन बरस का पैसा जो लोग दिया करते थे उस राजा के राज भर में जिस जिस ढब से हुआ खेती बारी करके हल जोत के और कपड़ा लत्ता बेच खोंच के सो सब

उनको छोड़ दिया अपने अपने घरों में बनाव के ठाठ करें और जितने राज भर में कुवे थे खण्डसालों की खण्डसालें लेजा उनमें उण्डेली गई और सारे बनों में और पहाड़ तलियों में लालटैनों की बहार झमझमाहट रातों को दिखाई देने लगी और जितनी झीलें थीं उन सब में कुसुम और टेसू और हरसिंगार तैरगया और केसर भी थोड़ी थोड़ी घोलो में आगयी और फुनंगे से लगा जड़ तलक जितने झाड़ झांखरों में पत्ते और पत्तों के बन्धे छूटे थे उनमें रुपहले सुनहले डांक गोंद लगा लगा के चिपकादिये और कह दिया गया जो सूही पगड़ी चौर सूहे बागे बिन कोई किसी डौलका किसी रूपसे न फिरे चले और जितने गव-इये नचइये भांड भगातिये ढांडी रासधारी और संगीत नाचते हुए हों सबको कह दिया जिन जिन गावों में जहां जहां हों अपने अपने ठिकानों से निकल कर अच्छे अच्छे बिछौने बिछाकर गाते बजाते धूम मचाते नाचते कूदते रहा करें ॥

ढूंढना गुसाईं महेन्दरगिर का उदयभान और उसके मा बापको और न पाना और बहुतसा तलमलाना और राजा इन्दर का उसकी चिट्ठी पढ़ के आना ।

यहां की बात और चुहलें जो कुछ हैं सो यहीं रहने दो अब आगे यह सुनो जोगी महेन्दरगिर और उसके नब्बे लाख अतीतों सारे बन के बन छान मारे कहीं कुँवर उदयभान और उसके मा बाप का ठिकाना न लगा तब उन्ने राजा इन्दर को चिट्टी लिखभेजी उस चिट्ठी में यह लिखा हुआ था तीनों जनों को मैंने हिरन और हिरनी

कर डाला था अब उनको ढूंढता फिरता हूं कहीं नहीं मिलते और जितनी सकत थी अपनी सी कर चुका हूं और मेरे मुँह से निकला कुँवर उदयभान मेरा बेटा और मैं उसका बाप उसकी सुसराल में सब ब्याह के ठाठ हो रहे हैं अब मुझ पर निपट गाढ़ है जो तुम से हो सके सो करो राजा इन्दर गुरू महेन्दरगिर के देखने को सब इन्द्रासन समेत आप आन पहुंचता है और कहता है जैसा आप का बेटा वैसा मेरा बेटा आप के साथ सारे इन्दरलोक को समेट के कुँवर उदयभान को ब्याहने चढूंगा गुसाईं महेन्दरगिर ने राजा इन्दर से कहा हमारी आप की एकही बात है पर कुछ ऐसी सुझाइये जिस में वह कुँवर उदयभान हाथ आवे यहां जितने गवैये और गायने हैं उनको साथ लेके हम और आप सारे वनों में फिरें कहीं न कहीं ठिकाना लग जायगा ॥

हिरन और हिरनियों के खेलका बिगड़ना और नये सिरसे कुँवर उदयभान का रूप पकड़ना ।

एक रात राजा इन्दर और गुसाईं महेन्दरगिर निखरी हुई चांदनी में बैठे राग सुन रहे थे करोरों हिरन आस पास आन के राग के ध्यान में चौकड़ी भूले सिर झुकाये खड़े थे इसमें राजा इन्दर ने कह दिया कि सब हिरनों पर पढ़के मेरी सकत गुरुके बहुरे भगत मंत्र ईश्वरो-वाच एक एक छीटा पानी का दो क्या जानें वह पानी क्या था पानी के छींटे के साथी कुँवर उदयभान और उनके मा बाप तीनों जने हिरनों का रूप छोड़कर जैसे थे वैसे हो जाते हैं महेन्द्रगिर और राजा इन्दर इन तीनों को गले लगाते हैं और पास अपने बड़ी आव

भगत से बैठाते हैं और वही पानी का घड़ा अपने लोगों को देकर वहां पहुंचा देते हैं जहां सिर मुंडाते ही ओले पड़े थे राजा इन्दर के लोग जो पानी के छींटे वही ईश्वरोवाच पढ़के देते हैं जो जो मरमिटे थे सब खड़े होते हैं और जो जो अधमुवे होके भाग बचे थे सब सिमट आते हैं राजा इन्दर और महेन्दरगिर कुँवर उदयभान और राजा सूरजभान और रानी लछमीबास को लेकर एक उड़न खटोले पर बैठ कर बड़ी धूमधाम से उनको अपने राजपर बैठा ने ब्याह के ठाठ करते हैं पनसेरियों हीरे मोती उन सब पर निछावर होते हैं राजा सूरजभाम और उदयभान और उनकी माता लछमीबास चित-चाही आस पाकर फूले अपने आप में नहीं समाते और सारे अपने राजको यही कहते जाते हैं जैरेभैरे के मुँह खोलदो और जिस जिस को जो जो उक्कत सूझे बोलदो आज के दिन से और कौनसा दिन होगा हमारी आंखों की पुतलियों का जिससे चैन है इस लाड़ले इक-लौते का ब्याह और हम तीनों का हिरनों के रूपसे निकल कर फिर राज पर बैठना पहले तो यह चाहिये जिन जिन की बेटियां बिन ब्याहियान कुँवारियान बालियान हों उन सब को इतना कर दो जो अपने जिस जिस चावचोज से चाहें अपनी अपनी गुड़ियां सँवार के उठादें और जब तलक जीते रहें हमारे यहां से सबके सब खाया पिया पकाया रींधा करें और सब राजभर की बेटियां सदा सुहागनें बनी रहें और सूहे राते छुट कभी कोई कुछ न पहना करें और सोने रूपे के किवांड़ गङ्गाजमनी सब घरों में लगजावें सब कोठों के माथों पर केसर और चन्दन के टीके लगे हों और जितने पहाड़ हमारे देस में हों उतने उतने ही रूपे सोने के पहाड़ आमने सामने खड़े हो जावें और सब डाकों के चोटियां मोतियों की मांग से बिन मांगे भर जावें और

फूलों के गहने और बन्दनवार से सब झाड़ पहाड़ लदे फँदे रहें और इस राजसे लगा उस राज तक अधरमें छतसी बांधदो चप्पा चप्पा कहीं न रहे फूल इतने बहुत सारे खंडजाय जोनदीया जैसी सचमुज फूलके बहतीयां हैं यह समझाजाय जहां भीड़ भड़क्का धूम धड़क्का न होना चाहिये और यह डौल करदो जिधर से दूल्हे को व्याहने चढ़े सब लालड़ी और हीरे और पुखराज की इधर उधर कँवलकी टट्टियां बँधजायें और क्यारियां सी हो जायँ जिनके बीचों बीचसे हो निकलें और कोई डांग और पहाड़तली का उतार चढाव ऐसा दिखाई न दे जिस की गोद पखरोटों और फूल फलों से भरी भतूली न हो ।

राजा इन्दर का ठाठ करना उदयभान के व्याहने के लिये ।

राजा इन्दर ने कह दिया वह रण्डियां चुलबुलियां जो अपने मद में उड़ चलियां हैं उनसे कहदो सोलह सिंगार बालबाल गजमोती पिरोवो अपने अपने अचरज और अचंभे के उड़न खटोलों को इस राजसे ले उस राज तलक अधरमें छतली बांधदो पर कुछ ऐसे रूप से उड़ चलो जो उड़नखटोलों की क्यारियां और फुलवारियां सी सैकड़ोंकोस तक होजायें और ऊपरही उपर मिरदंग बीन जलतरंग मुँहचंग घूँघरू तबले करताल और सैकड़ों इस ढब के अनोखे बाजे बजते आयें और उन क्यारियों के बीचमें हीरे पुखराज अनबेधे मोतियों के झाड़ और लालटैनों की भीड़भाड़ झमझमाहट दिखाई दे और और उन्हीं लालटैनों में से हथफूल फुलझड़ियां जाही जूहियां कदम गेंदा

चबेली इस ढब से छूटें जो देखतों की छातियोंके किवाड़ खुलजांय और पटाखे जो उछल उछल के फूटें उनमें से हँस्तीसुपारी और बोलते पखरौटे ढुलढुल पड़ें और जब तुम सबको हँसी आवे तो चाहिये उस हँसी के साथ मोती की लड़ियां झड़ें जो सबके सब उनको चुन चुनके राजराजे होजावें डोमिनियोंके रूपमें सारंगियां छेड़ छेड़ सोहलें गावो दोनों हाथ हिलावो उँगलियां नचावो जो किसी ने न सुने हों वह ताव भाव आव जाव राव चाव दिखावो ठुड्डिया कपकपावो और नाक भवें तान तान भाव बतावो कोई फूटकर रह न जावो ऐसा भाव जो लाखों बरस में होता है जो जो राजा इन्दर ने अपने मुँह से निकाला था आंख की झपक के साथ वहीं होने लगा और जो कुछ उन दोनों महाराजों ने इधर उधर कह दिया था सब कुछ उसी रूपसे ठीकठाक होगया जिस ब्याहने की यह कुछ फैलावट और जमावट और रचावट ऊपर तले इस जमघट के साथ हो कि उसका और कुछ फैलावा क्या होगा यह ध्यान करलो ।

ठाठ गुसाईं महेन्दरगिरिका ।

जब कुँवर उदयभान को उस रूप से ब्याहने चढ़े और वह बाह्मन अंधेरी कोठरी में मुंदा हुआ था उस को भी साथ लेलिया और बहुत से हाथ जोड़े और कहा बाह्मन देवता हमारे कहने सुन्ने पर न जावो तुम्हारी जो रीत होती चली आई है बताते चलो एक उड़नखटोले पर वह भी रीति बताने को साथ हुआ राजा इन्दर और गुसाईं महेन्दरगिर ऐरावत हाथी पर झूमते झामते देखते भालते सारा अखाड़ा लिये चले जाते थे राजा सूरजभान दूल्हे के घोड़े के साथ

माला जपता हुआ पैदल था इतने में एक सन्नाटा हुआ सब घबरा गये उस सन्नाटे में से वह जो जोगी के नव्वेलाख अतीत बने थे सब के सब जोगी बने हुये मोतियों की लड़ियों के सेली तागे गलों में डाल गातियां उसी ढब की बांधे मृगछालों और बाघम्बरों पर आटपके लोगों के जियों में जितनी उमंगें छारही थीं वह चौगुनी पचगुनी होगई सुखपाल और चंडोलों पर और रथों पर जितनी रानियां और महारानियां लछमीबास के पीछे चली आती थीं सब गुदगादियां सी होने लगीं उस में कहीं भरथरी का स्वांग आया कहीं जोगी जैपाल आ खड़े हुए कहीं महादेव और पारवती दिखाई पड़े कहीं गोरख जागे कहीं मछन्दरनाथ भागे कहीं मच्छ कच्छ बराह सन्मुख हुए कहीं परसराम कहीं बामनरूप कहीं हरनाकस और नरसिंह कहीं राम लछमन सीता सामने आये कहीं रावन और लङ्का का बखेड़ा सारे का सारा दिखाई देने लगा कही कन्हैया जी का जन्मअष्टमी होना और बसुदेव का गोकुल ले जाना और उनका उस रूप से बढ़ चलना और गाय चरानी और मुरली बजानी और गोपियों से धूमें मचानी और राधिका रस और कुबजा का बस करलेना कहीं बनसीबट चीर घाट बृन्दावन करील की कुंज बरसाने में रहना और ऊस कन्हैया से जो जो कुछ हुआ था सब का सब ज्यों का त्यों आंखों में आना और द्वारका में जाना और वहीं सोने के घर बनाना और फिर ब्रज को न आना और सोलह सौ गोपियों का तलमलाना साम्हने आगया उन गोपियों में से ऊधो का हाथ पकड कर एक गोपी के उस कहने ने सबको रुला दिया जो उस ढब से बोल के रौंधे हुये जी को खोलती थी ॥

कवित्त ।

जब छांड़ करील की कुंजन कों हरि द्वारकाजीवमां जाय बसे ।
कुलधूत के धाम बनाय घने महाराजन के महराज भये ॥
तज मोर मुकुट अरु कामरिया कछु औरहि नाते जोड़ लये ।
धरे रूप नये किये नेह नये और गइयां चरायेबो भूलगये ॥

अच्छापना घाटों का ।

जितने घाट दोनों राज की नदियों में थे कच्चे चांदी के थक्के से होकर लोगों को हक्का बक्का कर रहे थे निवाड़ भौलिये बजरे चलके मोरपंखी सोनामुखी श्यामसुन्दर रामसुन्दर और जितनी ढब की नावें थीं सुथरे रूप से सजी सजाई कसी कसाई सौ सौ लचके खाती आती जाती लहराती पड़ी फिरती थीं उन सब पर भी गवैये कंचनियां रामजनियां डोमानियां खचाखच भरी अपने अपने करतब में नाचती गाती बजाती कूदती फांदती धूमें मचाती अंगड़ाती जंभाती और ढुबी पडती थीं और कोई नाव ऐसी न थी जो सोने रूपे के पत्रों से मढ़ी हुई और असवारी से ढपी हुई न हो और बहुतसी नावों पर हिंडोले भी उसी ढब के उन पर गायनें बैठी झूलती हुई सोल्हे कि-दोर बागेसरी कान्हडे में गा रही थीं दलबादल ऐसे नवाड़ों के सब झीलों में भी छारहे थे ॥

आ पहुंचना कुँवर उदयभान का ब्याहने के ठाठ के साथ दुल्हन की डेवढी पर ।

उस धूम धाम के साथ कुंवर उदयभान सिहरा बांधे जब दुल्हन के घर तलक आपहुँचा और जो रीतें उनके घराने में होती चलीं

आती थीं होने लगीं मदनबान रानी केतकी से ठठोली करके बोली अब सुख समेटिये भर भर झोली सिर निहुड़ाये क्या बैटी हो आओ न टुक हम तुम मिलके झरोखों से उन्हें झांके रानी केतकी ने कहा ऐसी निलज बातें हम से न कर हमें ऐसी क्या पड़ी जो इस घड़ी ऐसी कड़ी कर रेल पेल इस उबटन और तेल फुलेल भरी हुई उनके झांकनेको जा खड़ी हों मदनबान इस रुखाई को उड़ानघाई की अंटियों में कर ।

दोहे अपनी बोली में ।

यों तु देखो बाछड़े जी बाछड़े जी बाछड़े ।
हम से अब आने लगी हैं आप यह मुहरे कड़े ॥
छान मारे बन के बन थे आप ने जिनके लिये ।
वह हिरन जोबन के मद में हैं बने दुल्हा खड़े ॥
तुम न जाओ देखने को जो उन्हें कुछ बात है ।
झांकते इस ध्यान में हैं उनके सब छोटे बड़े ॥
है कहावत जीको भावे योंहि पर मुँडियां हिलाय ।
लेचलेंगे आपको हम हैं इसी धुन में अड़े ॥
सांस ठण्डी भरके रानी केतकी बोली कि सच ।
सबतो अच्छा कुछ हुआ पर अब बखेड़े में पड़े ॥

वारीफेरी होना मदनबान का रानी केतकी पर और उसकी बासका सूंघना और उनींदेपन से ऊंघना

उस घड़ी कुछ मदनबान को रानी केतकी के मांझे का जोड़ा और भीना भीनापन और अँखड़ियों का लजाना और बिखरा बिखरा

जाना भला लगगया तो रानी केतकी की बास सूंघने लगी और अपनी आंखों को ऐसा कर लिया जैसे कोई ऊंघने लगता है सिर से लगा पांव तक जब वारी फेरी होके तलुवे सहलाने लगी रानी केतकी झटसे धीमी सी हँसके लचक साथ ले उठी मदनबान बोली मेरे हाथ के ठोके से वहीं पांव का छाला दुख गया होगा जो हिरनों की ढूंढाढूंढ में पड़गया था ऐसी दुखती चुटकी की चोट से मसोसकर रानी केतकी ने कहा कांटा अड़ा तो अड़ा और छाला पड़ा तो पड़ा पर निगोडी तू क्यों मेरा पँछाला हुई ।

सराहना रानी केतकी के जोबनका ।

रानी केतकी का भला लगना लिखने पढ़ने से बाहर है वह दोनों भवोंकी खिचावट और पुतलियों में लाज की समावट और नुकीली पलकों की रुँधाहट और हँसी की लगावट दंतडियों में मिसियों की उदाहट और इतनी सी रुकावट से नाक और तेवरी चढ़ालेना और सहेलियों को गालियां देना और चल निकलना और हिरनों के रूप से करछालें मार परे उछलना कुछ कहने में नहीं आता ।

सराहना कुँवरजी के जोबनका ।

कुँवर उदयभान के अच्छेपने में कुछ चल निकलना किसी से हो सके हायरे उनके उभारके दिनों का सुहानापन और चाल ढाल का अच्छन्न प्रच्छन्न उठती हुई कोंपलकी फवन और मुखड़े का गदराया हुआ जोबन जैसे बड़े तड़के हरे भरे पहाड़ोंकी गोद सूरज की किरन निकल आती है यही रूप था उनकी भीगति मसोंसे रस का टपका

पड़ना और अपनी परछाईं देखकर अकड़ना जहां तहां छांह उसका डौल ठीकठाक उनके पांवतले धूप थी ।

दुल्ह उदयभान का सिंहासन पर बैठना ।

और इधर उधर राजा इन्दर औरजोगी महेन्दरगिर जमगये दुल्ह उदय भान सिंहासनपर बैठा दुल्ह का बाप अपने बेटके पीछे माला लिये कुछ कुछ गुनगुनाने लगा और नाच लगा होने और अधरमें जो उड़नखटोले इन्दरके अखाड़े के थे सबके सब उस रूपसे छत बांधे हुए थिरका किये महा- रानियां दोनों समधनें आपुसमें मिलियां जुलियां और देखन दाखने को कोठोंपर चन्दन के किवाड़ों के अड़तलोंमें आबैठियां सांग सँगीत भण्डताल रहस होने लगा जितने राग और रागिनियां थीं यमनकल्यान (शुद्धकल्यान) झिंझोटी कान्हड़ा खम्माच सोहनी परज बिहाग सोरठ कालंगड़ा भैरवी खट ललित भैरों रूप पकड़े हुए सचमुच के जैसे गानेवाले होते हैं उसी रूपसे अपने अपने समय पर गाने लगे और गाने लगियां उस नाच का जो भाव ताव रचावट के साथ हुआ किसका मुँह जो कहसके जितने वहांके सुख चैन के घर थे माधोबि- लास रसधाम कृष्णनिवास मच्छीभवन चन्द्रभवन सब के सब लप्पे से लपेटे और सच्चे मोतियों की झालरें अपनी अपनी गांठमें समेटे हुए एक फबन के साथ मतवालों के रूप से झूमझाम बैठनेवालों के मुँह चूम रहे थे । बीचोंबीच उन सब घरों के एक आरसीधाम बनाया था जिसकी छत और किवाड़ और आंगन में आरसी छुट लकड़ी ईंट पत्थर की पुट एक उँगली की पोरी भर न थी चांदनी का जोड़ा पहने हुये चौदहवीं रात जब घड़ी छ एक रात रहगयी तब रानी

केतकी सी दुल्हन को उसी आरसीभवन में बैठाकर दुल्ह को बुला भेजा कुँवर उदयभान कन्हैया बना हुआ सिरपर मुकुट धरे सिहरा बांधे उसी तड़ावे और जमघट के साथ चान्दसा मुखड़ा लिये जा पहुँचा जिस जिस ढबसे बाम्हन और पण्डित कहते गये और जो जो महाराजों में रीतें चली आतियां थीं उसी डौलसे उसी रूपसे भौंरी गठजोड़ा सब कुछ होलिया ।

दोहे अपनी बोली के ।

अब उदयभान और रानी केतकी दोनों मिले ।
आस के जो फूल कुम्हलाये हुये थे फिर खिले ॥
चैन होताही न था जिस एक को उस एक बिन ।
रहने सहने सो लगे आपस में अपने रात दिन ॥
अय खिलाडी यह बहुत था कुछ नहीं थोडा हुआ ।
अनकर आपस में जो दोनों का गट जोडा हुआ ॥
चाह के डूबे हुए अय मेरे दाता सब तिरें ।
दिन फिरे जैसे इन्हों के वैसे अपने दिन फिरें ॥

वह उडनखटोलेवालियां जो अधर में छत बांधे हुए थिरक रहीं थीं भरभर झोलियां और मुट्ठिया हीरे और मोतियों से निछावर करने के लिये उतर आयियां और उडनखटोले ज्यों के त्यों अधर में छत बांधे हुए खडे रहे दूल्ह दुल्हन पर से सात सात फेरे होने में पिस पिस गयीं उन सभों को एक हिचकी सी लगगयी राजा इन्दर ने दुल्हन की मुंहदिखाई में एक हीरे का एक डालछपरखट और पीढी

पुखराजकी दी और एक पारिजात का पौधा जिससे जो फूल मांगिये सोही मिले दुल्हन के साम्हने लगादिया और एक कामधेनु गायकी पठिया भी उसके नीचे बांधदी और इक्कीस लौंडियां उन्हीं उड़नखटोलेवालियों से चुन के अच्छीसे अच्छी सुथरी गाती वजातियां सीती पिरोतियां सुघड़ से सुघड़ सौंपीं और उन्हें कहादिया रानी केतकी छुट उनके दूल्हसे कुछ बात चीत न रखियो तुम्हारे कान पहिलेही मरोड़े देता हूं नहीं तो सब की सब पत्थर की मूरतें बन जावोगी और गुसाईं महेन्दर गुरु जीने बावन तोले पाउ रत्ती जो सुन्ते हैं उसके इक्कीस मट्के आगे रखके कहा यह भी एक खेल है जब चाहिये बहुतसा तांवा गला के एक इतनी सी इसको छोड़ दीजियेगा कञ्चन हो जायगा और जोगी ने यह सभों से कह दिया जो लोग उनके ब्याह में जागे हैं उनके घरों में चालीस दिन चालीस रात सोनेकी टिड़ियों के रूपमें हुन बरसें और जब तक जियें किसी बात को फिर न तरसें नौ लाख निन्नानवे गायें सोने रूपे के सिंगौटियों की जड़ाऊ गहना पहने हुए घूंघुरू झुनझुनातियां बाह्मनों को दान हुईं और सात बरस का पैसा सारे राज को छोड़दिया बाईस सौ हाथी और छत्तीस सौ ऊंट लदेहुए रुपयोंके लुटा दिये कोई उस भीड़भाड़ में दोनों राज का रहनेवाला ऐसा न रहा जिसको घोड़ा जोड़ा रुपयों का तोड़ा सोने के जड़ाऊ कड़ों की जोड़ी न मिली हो और मदनबान छुट दूल्ह दुल्हन के पास किसी का हियाव न था जो बिन बुलाये चलीजाय बिन बुलाये दौड़ी आई तो वही आयी और हँसावे तो वही हँसाय रानी केतकी के छेड़ने को उनके कुँवर उदयभान को कुँवर कुँवर अजी कहके पुकारती थी और उसी बात को सौ सौ रूप में सँवारती थी॥

दोहे अपनी बोली के ।

घर बसा जिस रात उन्हों का तब मदनबान उस घड़ी ।
कहगई दुल्हे दुल्हन को ऐसी सौ बातें कड़ी ॥
बास पाकर केवड़े की केतकी का जी खिला ।
सच है इन दोनों जनों को अब किसी की क्या पड़ी ॥
क्या न आयी लाज कुछ अपने पराये की अजी ।
थी अभी इस बात की ऐसी अभी क्या हड़बड़ी ॥

दुलहन ने अपनि घूँघट से कहा ।

जी में आता है तेरी होठों को मल डालूं अभी ।
बस वे अय रण्डी तेरी दांतों की मिस्सी की धड़ी ॥

एङ्गलो ओरियन्टल प्रेस लखनऊ. मार्च १९०५